5 मुगल काल में विदेशी व्यापार की दुनिया

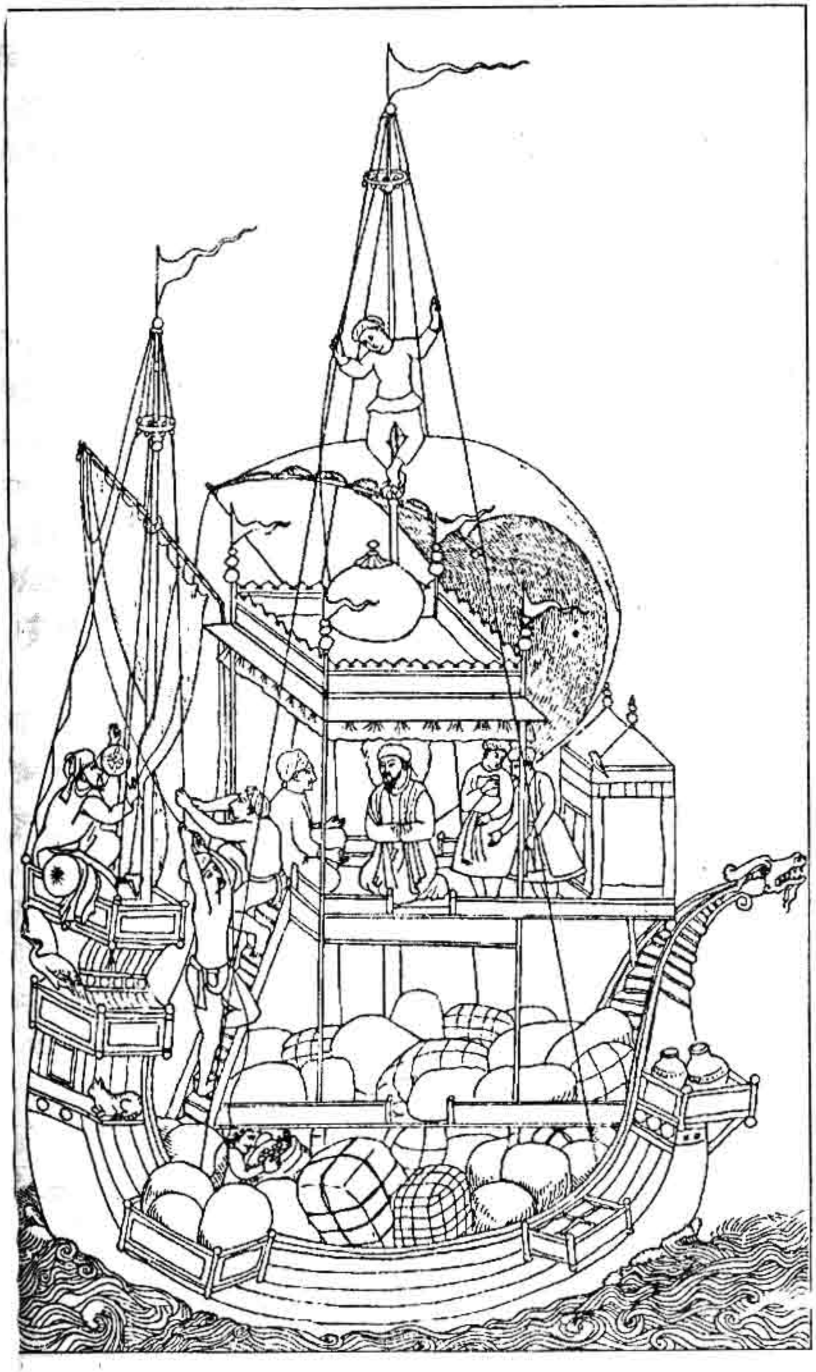

माल से लदकर आ रहे इस जहाज़ को देखो। जहाज़ के एक तरफ "मुअल्लिम" बैठा है और हाथ मे एक गोल उपकरण के साहरे वह तारों की स्थिति देखकर तय कर रहा है कि जहाज़ को अब किस दिशा मे जाना है। मज़दूर उसके कहे अनुसार पाल को घुमा रहे है। यह जहाज़ पाल का जहाज़ है जो हवा के बल पर चलता है। जहाज़ के ऊपर देखो, एक आदमी खड़े होकर चारों तरफ देख रहा है।

"क्या इस अनन्त सागर मे कही ज़मीन या द्वीप दिख रहा है? क्या कोई दूसरा जहाज़ नज़र आ रहा है?" जहाज़ के मालिक और व्यापारी दोनो बीच मे बैठकर बतिया रहे है।

इस जहाज़ मे मुख्यतः सूती कपड़े है। इन्हे भारत के पूर्वी तट पर स्थित बन्दरगाह मछिलिपटनम से खरीदा गया है। जहाज़ से इन्हे सूरत बन्दरगाह ले जाया जा रहा है। रास्ते मे कई छोटे बड़े बन्दरगाह जैसे मद्रास, कोचिन, कालीकट और गोवा पार कर चुके है। जहाज़ अब सूरत के निकट पहुंच रहा है।

सूरत मे सारा माल उतारा जायेगा। वहां देश विदेश के व्यापारी पहुंचे होगे। अरब से, ईरान से, इंग्लैड से, फ्रांस से, हॉलैंड से और न जाने कहां-कहां से व्यापारी सूरत आ पहुंचते है। इन्हे इस जहाज़ से कपड़े दिखाये जायेंगे और बेचे जायेंगे।

सूरत मुग़ल साम्राज्य का सबसे बड़ा और प्रमुख बन्दरगाह है। चलो, इसकी सैर करके देखें।

सूरत बन्दरगाह की सैर

सूरत शहर उस जगह पर बसा है जहां ताप्ती नदी अरब सागर में गिरती है। इसे नक्शे में पहचानो।

समुद्र से ताप्ती नदी में प्रवेश करने के बाद जैसे-जैसे हम सूरत की तरफ बढ़े तो किनारे पर बीच-बीच में मछुआरों के गांव पड़े। फिर आया वह गांव जहां मुग़ल राज्य के अमीरों के जहाज़ों के ठहरने का स्थान बना है। यही सारी बरसात ये जहाज़ इन्तज़ार करते ठहरे रहते हैं कि मौसम साफ हो तो समुद्र पार की यात्रा शुरू करें। नदी पर और आगे सूरत के सबसे धनवान व्यापारी मुल्ला अब्दुल ग़फ़ूर के जहाज़ों का डेरा है। और उसके बाद आता है फ्रांसीसी जहाज़ों का डेरा, फिर तुर्की व्यापारियों के जहाज़ों का डेरा और फिर जाकर हॉलैंड के व्यापारियों के जहाज़ों का डेरा।

नदी के किनारे बने इन डेरों को पार करते हुए हम सूरत शहर पहुंच गए हैं जिसके किले की दीवार नदी के किनारे-किनारे बनी है।

चुंगी

किला पार करते हुए हम शाही चुंगी घर पर उतरे - जहां व्यापारी अपने माल पर चुंगी नाम का कर चुकाते हैं। जो भी माल यहां बिकने आता है उस पर 2.5% से 5% तक टैक्स (चुंगी कर) लगता है। मान लो कोई कपड़े का लट्ठा एक सौ रुपये का है। उस पर व्यापारी लगभग ढाई रुपये से पांच रुपये चुंगी कर सरकार को देता है।

मुग़ल बादशाह को यहां से अच्छी आमदनी हो जाती है। जितना अधिक व्यापार हो उतनी अधिक चुंगी इकट्ठी होगी सो मुग़ल बादशाहों की व्यापार बढ़ोत्तरी में रुचि ज़रूर है।

टकसाल

चुंगी घर के सामने सड़क पार कर के मुग़लों की शाही टकसाल है जहां सिक्के ढलते हैं। यहां विदेशी व्यापारी सोना-चांदी देते हैं और मुग़ल राज्य में चलने वाले सिक्के ढलवा लेते हैं। इन्हीं सिक्कों से तो वे मुग़ल राज्य के अन्दर माल खरीदेंगे। टकसाल के साथ ही लगा है दरिया महल, जो कि बन्दरगाह की देखरेख करने वाले उच्च अधिकारी का निवास स्थान है।

मैदान में बाजार

अब चलो, इन इमारतों के पीछे फैले लंबे चौड़े मैदान पर पहुंचे। यहां एक तरफ छांव में दूर-दूर

टकसाल में सिक्के बन रहे हैं

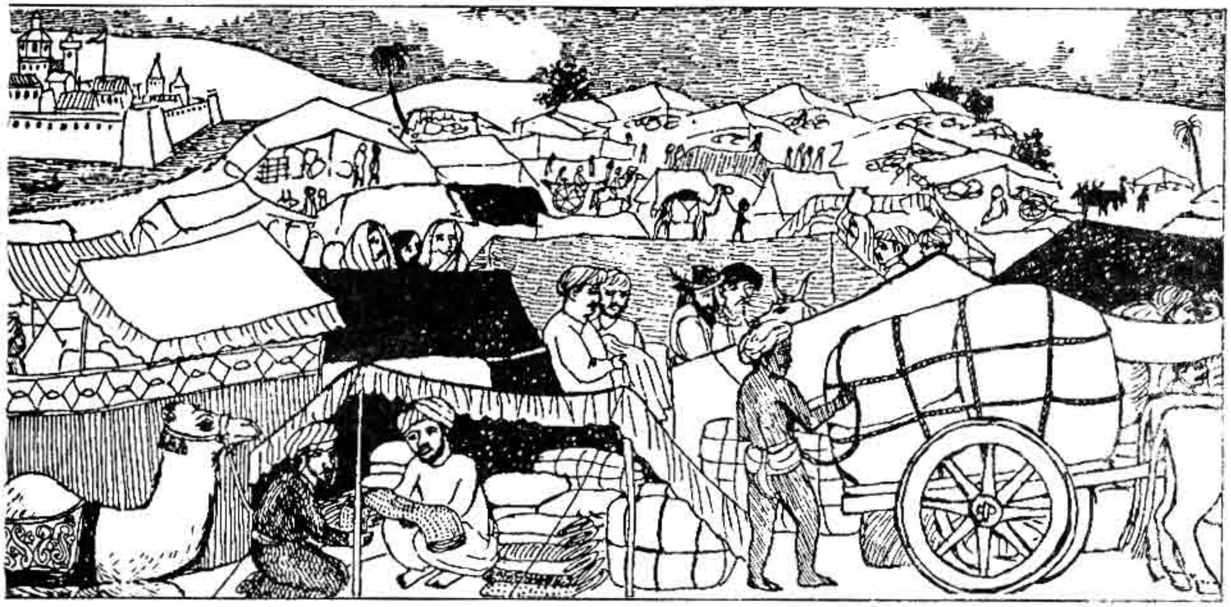

सूरत के मैदान में बाज़ार लगा है

से काफिलो में आये बैलगाड़ी, बैल, ऊंट और घोड़े खड़े हैं। व्यापारी गाड़ियों से कपड़ों के थान और नील व शक्कर के बोरों को मज़दूरों से उतरवाकर मैदान में अपने अपने तंबुओं में रखवा रहे हैं। दिन के चढ़ते-चढ़ते खरीद फरोख़्त भी तेज़ होती जा रही है। चारों तरफ दलालों की दौड़ लगी है। बाहर से माल खरीदने आये व्यापारी दलालों की मदद से ही माल खरीदते हैं। आखिर दलाल ही तो जानते हैं, माल कहां और कितने के भाव में मिल रहा है। हर चीज़ के अलग दलाल हैं - कोई कपड़ों की दलाली करता है, कोई शक्कर की, तो कोई नील की दलाली करता है। वे उस खास चीज़ के हर खरीददार और बेचने वाले को पहचानते हैं। इस बाज़ार में इन दलालों का बहुत बोलबाला है।

उधर देखो, शाही चुंगी घर के अधिकारी मैदान के दौरे पर निकले हैं। हर तंबू में माल की जांच करते हुये उस पर अपनी मुहर लगाते जाते हैं ताकि लोग पहचानें कि माल पर कर चुकाया गया है।

देर से पहुंचा काफिला

सूरत का एक गुजराती व्यापारी काफिले के पास खड़ा अपने आदमी को फटकार रहा है। आदमी बयाना से नील खरीद कर उसे बैलगाड़ियों के काफिले पर लदवा कर लाया है। सूरत पहुंचने में उसे 20 दिन की देरी हो गई थी और बेचारा बहुत थका हुआ, परेशान सा पहुंचा है कि मालिक की फटकार सुननी पड़ रही है।

आदमी समझाता है, "बैलगाड़ियां मिलने में देर हुई, मालिक! मैं आगरे में चौधरी उदयराम की गद्दी के सामने दस दिन तक चक्कर लगाता रहा। उनकी सारी बैलगाड़ियां बाहर गई हुई थी। फिर लखनऊ से 20 गाड़ियों का काफिला लौटा। तब उदयराम ने मुझे गाड़ियां किराए पर दीं।"

"बस बस! बहुत सुन ली तुम्हारी राम कहानी।" मालिक भुनभुनाया। उसके माल को आने में देरी हो गई थी सो दूसरों का माल पहले ही बिक चुका था

और वो भी ऊंचे दामों में। अब उसे दाम ऊंचे नही मिल पाएंगे वह जान गया था। "अरे, तुमने डाक से खबर क्यों नही भेजी? कासीदों की कोठी उदयराम के घर के बगल में ही है। ज़रूरी हरकारा (चिट्ठी) भेजते तो बीस दिन में आगरा से यहां आ जाता। पैसे ज़्यादा लगते तो क्या, मुझे मालूम रहता न कि माल आ रहा है। मै यहां सौदा तय करके रखता।"

(कासीदे उस समय के डाकिये थे जो दौड़कर जगह जगह चिट्ठी पहुंचाते थे।)

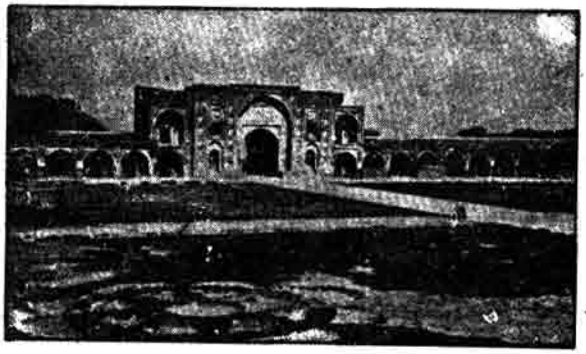

एक सराय

आगरा से सूरत का सफर

चलो, उधर डच व्यापारियों के तंबू की तरफ चलें। ये लोग आगरा से लंबा रास्ता तय करके सूरत आ पहुंचे हैं! ग्वालियर, सिरोंज, उज्जैन, बुरहानपुर से होते हुए सूरत पहुंचे हैं। तंबू के अन्दर यात्रा के किस्से सुनाए जा रहे हैं, कि कैसे दिन भर की धूल और हवा में सफर करते हुए रात को किसी शहर की सराय में शरण मिलती थी - और कभी-कभी सराय पूरी भरी मिली तो आम के बगीचे में ही रात काटनी पड़ी, कैसे अब रास्ते में पड़ने वाले नालों पर मुग़ल अधिकारियों ने अच्छे पक्के पुल बना दिए हैं तो सफर आसान हो गया है, कैसे रास्ते भर डाकुओं का भय बना रहा और इस डर से दो बार रास्ता बदल कर सफर में वे आगे बढ़े और इस कारण सूरत पहुंचने में कुछ दिनों की देरी हो गई।

इधर चुंगी, उधर कर

इतने में हमे कुहनी मारते हुए दो पारसी व्यापारी बातों में मशगूल, पर फुर्ती से चलते हुए निकले। एक अपनी उंगली पर गिनागिना कर कह रहा था, "हर शहर से निकलते समय चुंगी दो, सड़कों के लिए कर दो, सरायों और पुलों के लिए कर दो, गाड़ी में जुते ऊंट, बैल और अपने घोड़े रास्ते में घास चरते हैं तो चराई कर दो, पर जनाब अभी छुटकारा कहां मिला है - अभी नावों के लिए कर देंगे, बन्दरगाह के इस्तेमाल का कर देंगे, माल दे.ने का कर देंगे।

यह सब कर मुग़लों के राज्य को चुकाये और समुद्र पर पहुंच जायेंगे तो पुर्तगालियों का राज्य शुरू हो जायेगा। उनसे व्यापगर के 'पास' नही खरीदेंगे तो हमारे जहाज़ लूट लिये जायेंगे। इसीलिए चुपचाप पुर्तगालियों को रकम अदा करनी ही पड़ती है। इसको दो, उसको दो, बड़ा ताज्जुब है कि हम लोगों के पास भी कुछ बच जाता।" वे ठहाका लगा कर आगे बढ़ जाते हैं - तो ज़ाहिर है उनके पास काफी कुछ बचता होगा। हमारा ध्यान उनका पीछा करने से हटकर उस ओर जाता है जहां कुछ भगदड़ सी मची हुई है।

मजदूरों के लिए भगदड

अरे, अरे - मज़दूरों को लेकर दो व्यापारी भिड़ पड़े हैं। "इनसे मैंने तय किया है।" "नही, इनसे मैंने तय किया है।" हां भई - बरसात खत्म हो गई है। नवंबर का महीना है - जहाज़ अब जल्दी भर-भरा कर समुद्र पर होना चाहिए सो मज़दूरों के लिए भगदड़ मची है।

अब्दुल गफूर की धाक

मज़दूरों की ही बात को लेकर सूरत शहर के काज़ी बहुत परेशान हैं। चलो, पता करें क्या बात है।

हमने पूछा तो पता चला कि मल्लाहों का सरदार फकीर मुहम्मद अपनी बिरादरी के 40 लोगों को ले कर सूरत के सबसे बड़े व्यापारी अब्दुल गफूर के पास काम मांगने गया था। अब्दुल गफूर का जहाज़ लाल सागर को सफर करने को तैयार हो रहा था। मल्लाहों की ज़रूरत उसे थी ही। उसने फकीर मुहम्मद और उसके आदमियों को नौकरी पर रख लिया। नौकरी की शर्तें थी कि सरदार को महीने के 10 रु. मिलेंगे और 2 मन चावल, 8 सेर घी, 1 मन दाल मिलेगी। बाकी मल्लाहों को 5 रु. महीने, 1 मन चावल, आधा मन दाल व 4 सेर घी मिलेगा। और 2 साल तक वे सब अब्दुल गफूर के जहाज़ पर काम करेंगे।

पर इन शर्तों से हट कर एक शर्त और थी जिसे सुन कर काज़ी चौंके थे। अब्दुल गफूर ने मल्लाहों के सामने शर्त रखी थी कि समुद्र पर वे उसके जहाज़ की रक्षा करेंगे और अगर डाकुओं ने जहाज़ लूट लिया और वे न बचा पाए तो सूरत में उनका घर, सामान, परिवार सब अब्दुल गफूर के हवाले हो जाएगा। मल्लाह ये शर्त भी मान गए थे।

इस समझौते को शहर के काज़ी के पास दर्ज़ कराना था। (न्यायाधीश को उन दिनों काज़ी कहा जाता था।) जब काज़ी साहब ने आखरी शर्त पढ़ी तो वे चौंक गये। मल्लाहों से उन्होंने कहा, "अरे, यह क्या बेवकूफी कर रहे हो तुम लोग। तुम जहाज़ नहीं बचा पाये तो तुम्हारे बीबी बच्चे अब्दुल गफूर के गुलाम हो जायेंगे।" फकीर मुहम्मद बोला, "साहब हम गरीब और लाचार हैं। क्या कर सकते हैं!" काज़ी साहब बोले, "गरीबी है तो क्या बेवकूफी करोगे?" उन्होंने ऐसा अन्याय भरा समझौता दर्ज़ करने से मना कर दिया। पर अन्त में वही हुआ जो अब्दुल गफूर ने चाहा - अगले दिन मल्लाहों ने उन्हीं शर्तों पर अब्दुल गफूर का जहाज़ जाकर संभाल लिया।

तो इस तरह दुख, दर्द, गुस्से और ठहाके के सिलसिले के बीच व्यापार का काम चलता रहता है। आखिरकार सब तैयारियां हो जाती हैं और जहाज समुद्र को निकल पड़ते हैं।

मुगलों के समय में परिवहन, डाक यात्रा, कर वसूली के अनुभव तुमने पढ़े।

ये आज के व्यापारियों के अनुभवों से कैसे मिलते-जुलते हैं - इस पर चर्चा करो।

काज़ी को समझौते की कौन सी बात अन्यायपूर्ण लगी और क्यों?

हवा की दिशा और समुद्री यात्रा

ये थे नज़ारे सूरत शहर के। यहां तुमने देश विदेश के व्यापारियों को आते देखा। यहां पर यूरोप, अरब, ईरान, चीन, इंडोनेशिया और भारत के दूसरे भागों से व्यापारी आते थे। ये लोग जहाज़ों से सागरों को पार करते हुये आते थे।

उन दिनों पाल के जहाज़ होते थे जो समुद्र पर हवाओं के सहारे चलते थे। समुद्र पर हवा निश्चित दिशाओं में बहती है - कभी हवा पूरब से पश्चिम की ओर चलती और कभी पश्चिम से पूरब की ओर। जब हवा पूरब से पश्चिम की ओर चलती तब जहाज़ केवल पश्चिम दिशा में चल सकते थे।

गर्मी के मौसम मे यानी अप्रैल से सितंबर तक हवा दक्षिण पश्चिम में हिंद महासागर से भारत की ओर चलती है। उन महीनों में यूरोप से जहाज़ अफ्रीका का चक्कर लगाते हुये भारत आते थे। उन्ही महीनो मे अरब व्यापरियों के जहाज़ लाल सागर से भारत

के पश्चिमी तट पहुंचते थे। गर्मी के महीनों में जहाज़ भारत के पूर्वी तट से इंडोनेशिया की ओर चलते थे।

इंडोनेशिया में व्यापारी भारत में खरीदे सूती कपड़े बेचकर लौंग, दालचीनी, काली मिर्च, इलायची जैसे मसाले खरीदते थे। ठंड के मौसम में यानि अक्टूबर नवंबर में हवा का रुख बदलता। अब हवा उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर बहने लगती। इन हवाओं के सहारे पाल के जहाज़ भारत आ पहुंचते। ठंड के ही मौसम में यूरोप को रवाना होते थे और अरब जहाज़ लाल सागर की ओर चल पड़ते।

यूरोप से व्यापार

पुर्तगाल देश का नाविक वास्को ड गामा सबसे पहले सन् 1492 में यूरोप से अफ्रीका का चक्कर लगाते हुये भारत पहुंचा। इसके बाद एक-एक करके हॉलैंड, फ्रांस और इंग्लैंड के व्यापारी भारत आने लगे। वे यूरोप और अफ्रीका से सोना-चांदी लाते और भारत में उसके बदले में रेशमी और सूती कपड़े खरीदकर इंडोनेशिया ले जाते। वहां इन कपड़ों के बदले में मसाले खरीदकर यूरोप ले जाते। यूरोप में इन मसालों की खूब मांग थी। व्यापारियों को इसमें 20-30 गुना मुनाफा होता था। धीरे-धीरे यूरोप में भारत के कपड़ों की मांग बढ़ने लगी। सो भारत से कपड़ों की खरीदी भी बढ़ने लगी।

हिन्द महासागर पर पुर्तगालियों का राज्य बना

हिन्द महासागर, जिस पर से व्यापार होता था, पर कई लोगों की निगाहें थी।

मानचित्र में देखो कि हिन्द महासागर के पास के महाद्वीपों में किन चीज़ों का व्यापार होता था। सागर में जहाज़ों के चलने के रास्ते किन बन्दरगाहों से होते हुए निकलते थे।

इन्ही रास्तों पर वे जहाज़ चलते थे जिनसे माला-माल हुआ जा सकता था। इन बन्दरगाहों और रास्तों पर अगर किसी का कब्ज़ा हो जाये तो पूरा व्यापार उनके हाथ में आ सकता था।

यूरोप के कई देश - फ्रांस, इंग्लैंड, हॉलैंड, पुर्तगाल आदि - हिन्द महासागर के व्यापार पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश में रहे। पर सन् 1492 से सन् 1600 के बीच पुर्तगाल देश के व्यापारियों ने यह कर दिखाया।

नक्शे में देखो, पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर को घेरने वाले पूरे समुद्र तट पर जगह-जगह कब्ज़ा कर के अपने किले बना लिए थे। ये किले जहाज़ चलने के सारे रास्तों पर निगरानी रख पाते थे।

इस तरह पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर पर अपना राज्य बनाया। पानी पर राज्य? हां। हुकुम था कि इस सागर पर सिर्फ पुर्तगाली जहाज़ व्यापार करेंगे। उनकी इज़ाज़त बग़ैर दूसरा कोई व्यापारी अपना जहाज़ इस सागर से नही ले जाएगा। पुर्तगालियों की इज़ाज़त मोटी रकम दे कर पास के रूप में खरीदनी पड़ती थी।

क्या किसी की हिम्मत थी टक्कर लेने की? तो सेना सिर्फ ज़मीन पर पैदल या हाथी घोड़े पर चलने वाली नही होती। सेना समुद्र पर भी होती है - जहाज़ो पर तैनात रहती है। जिन पर बन्दूकें और तोपें जमी होती हैं।

पुर्तगालियों से टक्कर लेने वाले अरब, गुजराती व अन्य व्यापारियों के जहाज़ कितनी ही बार उनकी नौ सेना (नाव पर सैना) द्वारा लूटे गए और गोलाबारी से डूबे। जिन बन्दरगाहों पर दूसरे व्यापारियों का माल उतरता-चढ़ता था उन बन्दरगाहों को पुर्तगालियों की नौ सेना ने तबाह किया। उनके मुकाबले की नौ सेना किसी की न थी। हिन्दुस्तान के तो किसी भी राजा ने नौ सेना तैयार करने की तरफ ज़्यादा ध्यान नहीं

हिंद महासागर में व्यापार

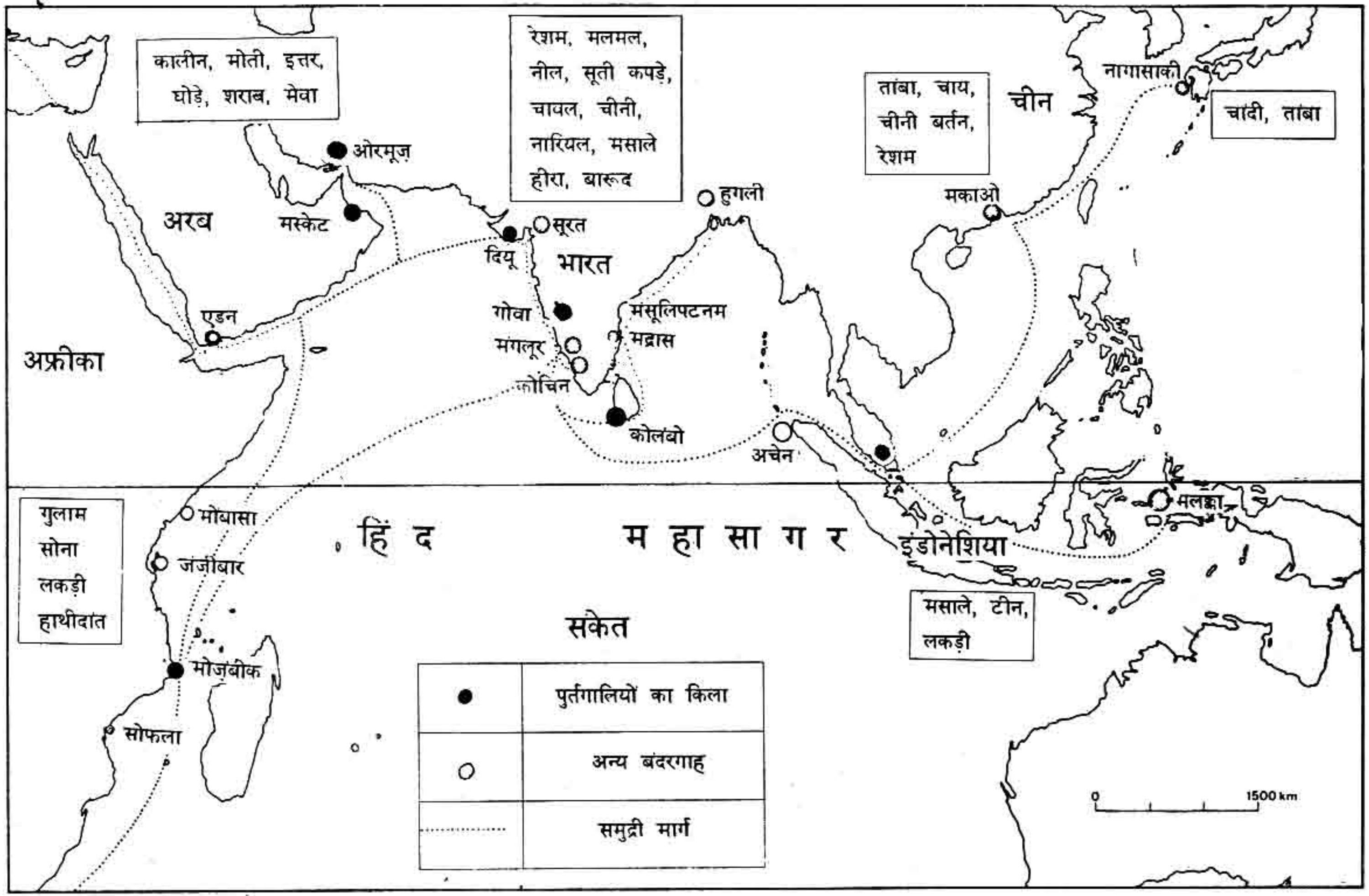

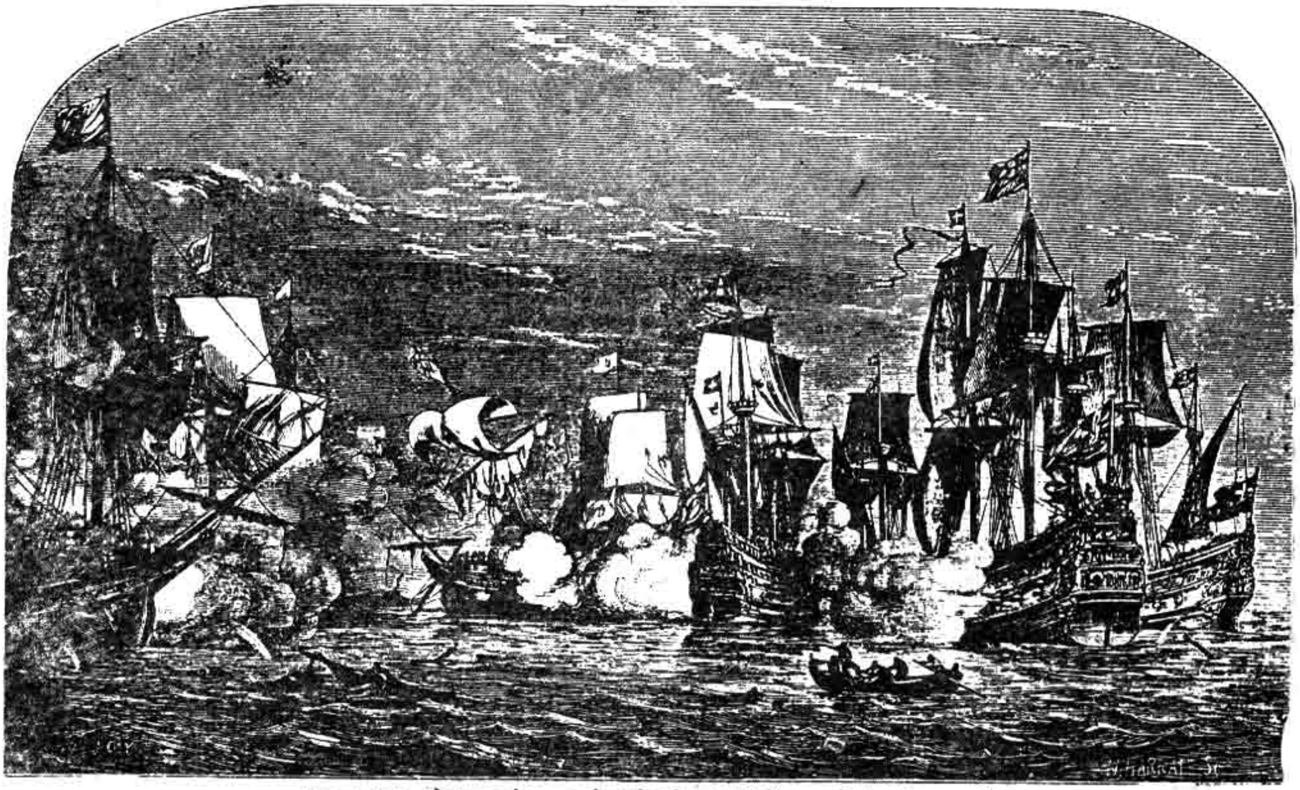

सन 1612 में सूरत के पास में पुर्तगाली व अंग्रेज़ी जहाज़ों के बीच लड़ाई

दिया था। मुग़ल बादशाहों ने भी नहीं। इसलिए पुर्तगालियों से परेशान होकर भी कोई उन्हें खदेड़ न सका।

इंडोनेशिया पर डच लोगों का राज्य

कुछ वर्षों बाद हॉलैंड देश के लोग - जो डच कहलाते थे - ने पुर्तगालियों को भी मात कर दिया। उन्होंने पुर्तगालियों को हरा कर इंडोनेशिया पर अपना राज्य बना डाला और इस तरह वहां उगने वाले मसालों पर उनका एकछत्र अधिकार बन गया।

भारत में यूरोप के व्यापारियों की होड़

भारत में दूसरे यूरोपीय देश के व्यापारी पुर्तगाली लोगों के हाथ से व्यापार छीनने की कोशिश करते रहे। समय के साथ पुर्तगाली नौ सेना और किलों की ताकत अंग्रेज़, डच और फ्रांसीसी लोगों के मुकाबले के कारण कमज़ोर पड़ गई। उसके बाद भारत में यूरोप के यह सभी लोग व्यापार हथियाने की होड़ में लगे रहे। कुछ समय तक किसी एक का भारत के व्यापार पर अधिकार नहीं जम सका।

यूरोप के सभी देशों के व्यापारी हमेशा इसी कोशिश में लगे रहते थे कि वे भारत में कम से कम कीमत दे कर सामान खरीद सकें। फिर वे इस सामान को यूरोप में अधिक से अधिक दाम पर बेच कर खूब मुनाफा कमा सकें। उन्होंने पाया कि सूरत, मसूलीपटनम जैसे बड़े बन्दरगाहों पर जो सामान व्यापारियों द्वारा बिकने लाया जाता है वह महंगा मिलता है। इसलिए यूरोप के व्यापारी अन्दर गांव-गांव में अपना आदमी या एजेन्ट

भेज कर सीधे कारीगरों से माल खरीदने की कोशिश में रहते ताकि सस्ता माल मिले।

पर गांव-गांव से माल लाने में उनके आदमी को कई तरह के कर चुकाने पड़ते थे। यूरोप के व्यापारियों को ये कर बहुत अखरते। इन्हें चुकाने में बहुत पैसे खर्च हो जाते थे और माल की कीमत बढ़ जाती थी। यह बात गुरुजी से समझो।

इन व्यापारियों ने व्यापार का अधिक से अधिक लाभ उठाने का एक तरीका अपनाया। वे बादशाहों व राजाओं के पास अपने-अपने दूत भेजते और भारत में खुल कर व्यापार करने की इज़ाज़त मांगते। व्यापारियों के दूत कुछ करों को न देने की छूट मांगने लगे। इसके बदले में वे बादशाहों व राजाओं को बहुमूल्य भेंट पेश किया करते थे। बहुत बार उन्हें करों की छूट मिल जाया करती थी। राजाओं के मन में यह आशा रहती थी कि करों में छूट देने से उनके राज्य में ज़्यादा व्यापार आकर्षित होगा, और राज्य खूब फलेगा-फूलेगा। इससे और अधिक कर मिलेगा।

करों में बढ़ोतरी की उम्मीद के अलावा हिन्दुस्तान के राजाओं के मन में यूरोपीय व्यापारियों की तरफ से एक धमकी का असर भी था। पुर्तगाली नौ सेना का मुकाबला दूसरे यूरोपीय देशों की सशक्त नौ सेनाएं ही कर सकती थी और हिन्दुस्तान के जहाज़ों को पुर्तगालियों के खतरे से सुरक्षा की ज़रूरत थी। अंग्रेज़, फ्रांसीसी व डच कहते, "व्यापार की छूट दोगे तभी हम हिन्दुस्तानी जहाज़ों की सुरक्षा की गारण्टी देंगे। नही तो मौका मिलने पर उन्हें लूटा व डुबोया जाएगा।"

यूरोपीय देशों द्वारा व्यापार के लाभ पर कब्ज़ा करने से संबंधित पांच महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।

इस स्थिति का फायदा उठाकर यूरोप के व्यापारियों ने हिन्दुस्तान में व्यापार का खूब लाभ लूटा। उन्हें कई कर न देने की छूट मिली, ज़मीन खरीद कर उन्होंने अपने गोदाम, घर, बन्दरगाह बनाए और अपने-अपने किले भी बनाए। इन व्यापारियों ने आगे जाकर किस तरह भारत में अपना राज्य बना लिया, यह तुम अगले पाठ में पढ़ोगे।

o o o

अभ्यास के प्रश्न

1. यूरोप के व्यापारी इंडोनेशिया जाकर मसाले खरीदने से पहले अफ्रीका और भारत के बन्दरगाहों पर क्यो रुकते थे?
2. मुग़लों के समय मे व्यापारी अगर माल एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना चाहे तो उसकी क्या व्यवस्था थी?
3. मुग़ल काल मे डाक से खबर पहुंचाने की क्या व्यवस्था थी?
4. जहाज़ चलाने का काम कौन लोग करते थे? उन्हें इस काम के बदले मे क्या मिलता था?
5. पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर पर अपना राज्य किस तरह बनाया? इसका उन्होंने क्या फायदा उठाया?
6. पुर्तगालियों को भारत के राजा हरा कर भगा क्यों नहीं पाए?
7. भारत के राजाओ ने यूरोपीय देश के व्यापारियों को किस तरह की सहायता दी? उन्होंने यूरोपीय व्यापारियों को सहायता क्यों दी?